भा.कृ.अनु.प.-भारतीय सोयाबीन अनुसन्धान संस्थान, खंडवा रोड, इन्दौर-452001

फ़ाइल् क्रमांक. प्रेस नोट/प्रेस व पब्लिसिटी/2021/22 **दिनांक 19.06.2021**

प्रेस नोट

भारत की आजादी के 75 वर्षो के उपलक्ष्य में मनाये जा रहे अमृत महोत्सव के अंतर्गत दिनांक 19 जून, 2021 को भा.कृ.अनु.प.-भारतीय सोयाबीन अनुसंधान संस्थान, इंदौर एवं आई.टी.सी. (मध्य प्रदेश) द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित "सोयाबीन की उत्पादन तकनिकी" पर कृषक प्रशिक्षण की प्रेस नोट

भारत सरकार एवं भारतीय कृषि अनुसन्धान परिषद्, नई दिल्ली के निर्देशानुसार भारत की आजादी के 75 वर्षो के उपलक्ष्य में मनाये जा रहे "अमृत महोत्सव" के अंतर्गत दिनांक 19 जून, 2021 को इन्दौर स्थित भा.कृ.अनु.प.-भारतीय सोयाबीन अनुसंधान संस्थान (आई,सी.ए.आर. - आई.आई.एस.आर.) एवं आई.टी.सी. लिमिटेड के संयुक्त प्रयास से ज़ूम प्लेटफार्म एवं YouTube चैनल के माध्यम से एक साथ किये गए सजीव प्रसारण से "सोयाबीन की उत्पादन तकनिकी" विषय पर ऑनलाइन कृषक प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया. इन संस्थानों के सोशल मीडिया चैनलों पर एक साथ प्रसारित इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में मध्य प्रदेश के शहरी, ग्रामीण तथा सुदूर क्षेत्रों से एक साथ 7500 कृषकों ने "सोयाबीन उत्पादन की उन्नत तकनिकी एवं नवीनतम पद्धतियों पर न केवल वैज्ञानिक जानकारी प्राप्त की, अपितु सोयाबीन अनुसन्धान संस्थान के वैज्ञानिकों के साथ तकनिकी चर्चा भी की. आशा हैं कि, इसमें भाग लेने वाले प्रत्येक कृषक प्रशिक्षनार्थी अपने आस-पड़ोस एवं गाँव के अन्य 10 कृषकों को इस प्रशिक्षण से प्राप्त जानकारी पहुचाएंगे जिससे इस एक प्रयास से एक साथ 75,000 सोयाबीन कृषकों के साथ नवीनतम तकनिकी का प्रचार-प्रसार एवं खेती में अंगीकरण हो सके.

सोयाबीन फसल की बोवनी से कुछ ही दिनों पूर्व आयोजित इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में आई,सी.ए.आर.-आई.आई.एस.आर. इन्दौर के वैज्ञानिकों द्वारा सोयाबीन फसल की उत्पादकता में वृद्धि के के मुख्य कारकों पर पांच तकनिकी सत्रों में कृषकोपयोगी जानकारी प्रदान की. इसमें डॉ मृणाल कुचलान ने"सोयाबीन की नवीनतम किस्में, बीज उत्पादन एवं गुणवत्ता परीक्षण के बारे-में जानकारी देते हुए वर्त्तमान में लोकप्रिय जे.एस. 95-60 के स्थान पर जे.एस. 20-69, जे.एस. 20-98, जे.एस. 20-34 जैसी अन्य किस्मों के अंतर्गत क्षेत्रफल बढ़ाने की अनुशंसा की. इसी कड़ी में फसल उत्पादन विभाग के अध्यक्ष डॉ एस.डी .बिल्लोरे ने मौसम कि विषम परिस्थिति को ध्यान में रखते हुए सोयाबीन की बोवनी के लिए बी.बी.एफ. या रिज एवं फरो पद्धति को अपनाने कि सलाह दी. इस अवसर पर डॉ. राकेश कुमार वर्मा ने रासायनिक खरपतवारनाशकों के उपयोग समेत खरपतवार प्रबंधन के अन्य उपायों को भी अपनाने का आवाहन किया. "सोयाबीन के प्रमुख कीट एवं रोग प्रबंधन" विषय पर आयोजित तकनिकी सत्रों में डॉ .लोकेश कुमार मीणा, डॉ. अमरनाथ शर्मा एवं डॉ. लक्ष्मण सिंह राजपूत ने सोयाबीन कि बोवनी के समय फफुन्दनाशक, कीटनाशक एवं जैविक कल्चर के प्रयोग को प्राथमिकता देने पर जोर दिया.

इस प्रशिक्षण कार्यक्रम के समापन के अवसर पर माननीय डॉ. ए.के.सिंह, उपमहानिदेशक (कृषि विस्तार), भारतीय कृषि अनुसन्धान परिषद्, नई दिल्ली ने अपने उद्बोधन में कहा कि वर्तमान में केंद्र सरकार सोयाबीन एवं राइ-सरसों जैसी तिलहनी फसलों के उत्पादन बढ़ाने अपना पूरा ध्यान केन्द्रित कर रही हैं जिसके लिए विभिन्न अपारंपरिक जिलों को अधिसूचित किया गया हैं. उन्होंने यह भी कहा कि उत्तर प्रदेश के बुंदेलखंड एवं उत्तराखंड जैसे क्षेत्रों के किसानों को मध्य प्रदेश के किसानों से सोयाबीन की सफलतम खेती कि सीख लेनी चाहिए. साथ ही उन्होंने भारतीय सोयाबीन अनुसन्धान संस्थान को देश के विभिन्न जिलों में कार्यरत कृषि विज्ञान केन्द्रों के साथ मिलकर सोयाबीन की उन्नत तकनिकी एवं इसके खाद्य उपयोग बढ़ाने के लिए सामूहिक प्रयास करने के लिए निर्देशित किया. उनके अनुसार सोयाबीन कृषकों को अपने उत्पादन के उचित मूल्य पाने के लिए "फार्मर प्रोडूसर आर्गेनाइजेशन" यानि "सोयाबीन-कृषक उत्पादक समूह संस्था" का गठन किया जाना चाहिए जिसके लिए फिक्की (फेडरेशन ऑफ़ इंडियन चेम्बर्स ऑफ़ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री) जैसे उद्योग संस्था की सहायता प्राप्त की जा सकती हैं.

इस अवसर पर भारतीय सोयाबीन अनुसन्धान संस्थान, की निदेशक डॉ. नीता खांडेकर द्वारा संस्थान द्वारा किये जा रहे तकनिकी विकास एवं उनके प्रचार-प्रसार कार्यक्रमों को अधिक सुदृढ़ किये जाने का वचन दिया. उन्होंने यह बताया कि बिहार एवं उत्तर प्रदेश के बुंदेलखंड क्षेत्र में सोयाबीन की खेती को बढ़ावा देने के लिए तकनिकी विकास के कार्यक्रम क्रियान्वित जा ही रहा है, जबकि अन्य राज्य जैसे पंजाब, हरियाणा तथा ओडिशा के लिए रोडमैप बनाया जा रहा हैं.

इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में कृषक-वैज्ञानिक परिचर्चा सत्र का भी आयोजन हुआ जिसमे प्रतिभागी कृषकों ने ज़ूम-चैट एवं यूट्यूब चैनल पर कमेन्ट लिखकर शंकाओं का समाधान किया. इस सम्पूर्ण प्रशिक्षण कार्यक्रम के आयोजन एवं समन्वयन भारतीय सोयाबीन अनुसन्धान संस्थान के डॉ. बी.यू. दुपारे, प्रधान वैज्ञानिक (कृषि विस्तार) व डॉ. सविता कोल्हे तथा आई.टी.सी. लिमिटेड के डॉ. भुवनेश द्वारा किया गया.